RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

वर्ष : 74 अंक : 20

सृष्टि संवत् 1960853118

13 अगस्त, 2017

दयानन्दाब्द 193

वार्षिक : 100 रु.

आजीवन : 1000 रु.

दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 20, 10–13 अगस्त 2017 तदनुसार 29 श्रावण सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

श्रावणी पर्व और कृष्ण जन्माष्टमी का महत्व

ले. श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्रावणी पर्व और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दोनों ही पर्व हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। श्रावणी का पर्व जहां हमें स्वाध्याय की ओर प्रेरित करके आत्मिक उत्थान की भावना को जगाता है, मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है, वहीं श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हमें ऐसे महापुरूष की याद दिलाता है, जिसने धर्म की स्थापना और दुष्टों का संहार करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन वेद के अनुसार था। योगीराज श्रीकृष्ण कभी अकर्मण्य नहीं रहे। वेद के अनुसार कुर्वन्नेवेह कर्माणि जीजिविच्छेत् शतं समा: मन्त्र को सार्थक करते हुए जीवनपर्यन्त कर्म करते रहे। ऐसे महापुरूषों का जन्मदिन मनाना हमारे जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है। नीतिकार के अनुसार महाजनो येन गता: स: पन्था: के अनुसार में ऐसे महापुरूषों का अनुकरण करना चाहिए।

आर्य बन्धुओं! श्रावणी का यह पावन पर्व हमें युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने का संदेश देता है। जिस महर्षि दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगाकर वेद का अमूल्य ज्ञान मानव जाति के लिए सुलभ कराया, हम उस महर्षि दयानन्द का ऋण कभी नहीं चुका सकते। अगर हम ऋषि के ऋण से उऋण होना चाहते हैं तो हमें महर्षि दयानन्द द्वारा वेद ज्ञान की ज्योति को घर-घर में प्रज्वलित करना होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा है और उसका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का धर्म ही नहीं परम धर्म बताया है। इसलिए श्रावणी के इस पर्व की महत्ता को समझते हुए हम सभी अपनी संस्कृति और सभ्यता के चिह्न यज्ञोपवीत को धारण करके स्वाध्याय का संकल्प लें। अगर हम प्रतिदिन एक वेद मन्त्र का भी अच्छी तरह स्वाध्याय करते हैं, उसे अपने आचरण में लाने का प्रयास करते हैं तो हम निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द के ऋण से उऋण हो सकेंगे।

श्रावणी पर्व के एक सप्ताह के बाद आर्य संस्कृति के उन्नायक योगीराज श्रीकृष्ण जी का जन्मदिवस आता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी योगीराज श्रीकृष्ण के विषय में सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि योगीराज श्रीकृष्ण एक आप्त पुरूष थे और उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कोई भी बुरा कार्य नहीं किया था। ऐसा महान् व्यक्तित्व जिसने विवाह के पश्चात 12 वर्ष दोनों पति-पत्नी ने ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करके प्रद्युम्न जैसी ओजस्वी संतान को पैदा किया था। कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर हमें श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में समाज में फैली अवधारणाओं को समाप्त करना होगा। बड़े शर्म की बात है कि योगीराज श्रीकृष्ण जैसे उज्जवल चरित्र के व्यक्तित्व को भोगी, रासलीला रचाने वाला, गोपियों के वस्त्र चुराने वाला, माखनचोर आदि नामों से पुकारा जाता है। श्रीकृष्ण के स्वरूप की झांकियां बनाकर उन्हें गोपियों के वस्त्र चुराते हुए, रासलीला रचाते हुए, चोरी करते हुए इस प्रकार से दिखाया जाता है कि सिर शर्म से झुक जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि यदि भागवत पुराण न होता तो श्रीकृष्ण के सदृश महात्माओं की निन्दा नहीं होती। इसीलिए सभी आर्य बन्धुओं का कर्त्तव्य है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर कार्यक्रम का आयोजन करके श्रीकृष्ण के उज्जवल जीवन पर प्रकाश डाला जाए। पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण के स्वरूप का खंडन करके महाभारत और गीता के आधार पर उनके कर्मयोगी, धर्मरक्षक आदि स्वरूप को जनता के सामने रखे। इसीलिए जन्माष्टमी के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं को चिन्तन और मनन करके इस पर्व की महत्ता को जानने का प्रयास करना चाहिए।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 7 अगस्त को श्रावणी रक्षाबन्धन और 15 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आ रहे हैं। दोनों पर्व आर्यों के लिए प्रेरणादायक हैं। श्रावणी के पर्व पर यज्ञोपवीत धारण करके स्वाध्याय का संकल्प लेने की रीति प्राचीन काल से चली आ रही है। वर्तमान में इस पर्व ने रक्षाबन्धन का रूप धारण कर लिया है। भाई-बहन के आपसी स्नेह और प्यार के कारण यह पर्व समाज का हिस्सा बन गया है। इसीलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी-अपनी आर्य समाजों में इन दोनों पर्वों को धूमधाम के साथ मनाएं। योगीराज श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में प्रचलित कपोल-कल्पित अवधारणाओं का खण्डन करके श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जनता के समक्ष रखें। लोगों में वैदिक साहित्य बांट कर उन्हें स्वाध्याय की प्रेरणा दें तथा अपनी संस्कृति और सभ्यता के प्रति जागरूक करें और ऋषियों के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

वैदिक भारत–कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

सर्वोपरि महान ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सृष्टि के आदि में उत्पन्न ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जो ईश्वर ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा द्वारा प्रकट वा स्थापित किया था। इन चार ऋषियों ने ईश्वर की ही प्रेरणा से चारों वेदों का ज्ञान पंचम ऋषि ब्रह्मा जी को कराया। इस प्रकार सृष्टि के आरम्भ में पांच ऋषि हुए। उन्हीं से अध्ययन व अध्यापन की परम्परा आरम्भ होकर वर्तमान समय तक चली आई है। यदि ईश्वर वेदों का ज्ञान न देता तो संसार में तब भी व उसके बाद भी अन्धकार ही अन्धकार होता, विद्या का प्रकाश कदापि न हुआ होता। जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र व पृथिवी आदि सभी लोक लोकान्तरों व जड़ पदार्थों सहित पृथिवी, अग्नि, जल, वायु और आकाश को बनाया है, उसी प्रकार मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता 'ज्ञान' को जानकर उसका प्रकाश भी ईश्वर ने ही सूर्य, चन्द्र आदि प्रकाशय-प्रकाशक लोकों की भांति ईश्वर ने ही किया है। संसार वा ब्रह्माण्ड में ईश्वर ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी है। ज्ञान का आदि स्रोत व अन्तिम स्रोत भी ईश्वर ही है। जीवात्मा में जो ज्ञान है वह सब ईश्वर से ही उसको प्राप्त होता है भले ही वह इसके प्राप्त करने में ईश्वर प्रदत्त शरीर से कुछ पुरुषार्थ व तप अवश्य करता है। यदि ईश्वर ज्ञान न दे तो जीवात्मा स्वयं ज्ञान उत्पन्न नहीं कर सकता। जीवात्मा व मनुष्यों में यह सामर्थ्य नहीं की वह सृष्टि के आरम्भ में भाषा व ज्ञान की उत्पत्ति कर सके। ज्ञान का निमित कारण ईश्वर ही है। ज्ञान की वाहक व धारक बुद्धि परमात्मा ही बनाता है। यदि वह उसमें ज्ञान ग्रहण करने व धारण करने की सामर्थ्य उत्पन्न न करता तो मनुष्य कुछ भी कर लेता, वह वेद से भी ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता था। मनुष्य ईश्वर का सदा सर्वदा ऋणी है जिससे कुछ नाममात्र उऋण होने के लिए ही वेदों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का विधान किया गया है। ईश्वर की स्तुति करने से जीवात्मा की उससे प्रीति होती है, ईश्वर से प्रार्थना करने से जीवात्मा में अहंकार का नाश होता है और ईश्वर की उपासना करने से ईश्वर के सभी सदगुण जीवात्मा में प्रविष्ट होकर जीवात्मा को आत्मोन्नति कराने के साथ मोक्ष प्रदान कराने में भी सहायक होते हैं।

यहां वैदिक नियम का उल्लेख भी कर दें जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। नियम है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। यह नियम ऋषि दयानन्द द्वारा वैदिक ज्ञान के आधार पर निर्मित है। यह नियम आर्य समाज का प्रथम नियम भी है। नियम में कहा गया है कि सब सत्य विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। परमेश्वर ही सब पदार्थों, जो ब्रह्माण्ड में है, उनका भी आदि मूल है। इस नियम में वेदोत्पत्ति और सृष्टि रचना की झलक मिलती है कि यह ईश्वर से ही हुई हैं। जो मनुष्य कोई ज्ञानपूर्वक कार्य करता है तो उस ज्ञानपूर्वक किये गये कार्य के कारण उसको उस विषय का ज्ञानी कहा जाता है। एक अध्यापक कक्षा 10 में विज्ञान पढ़ाता है। वह जितना पढ़ाता व जानता है, उस सीमा तक वह ज्ञानी होता है। हमारा यह समस्त ब्रह्माण्ड भी ज्ञान व बुद्धिपूर्वक रचा गया है। जिसने रचा है वह सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान सत्ता ही हो सकती है। उसका सत्य, चित्त, आनन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वातिसूक्ष्म आदि गुणों वाला होना आवश्यक है।

अत: अध्यापक की भांति सृष्टि रचना करने और जीवात्माओं को मनुष्य आदि शरीर देकर उनका पालन व कर्म-फल भोग की व्यवस्था करने से वह ईश्वर ज्ञानी व न्यायकारी सिद्ध होता है। ऋषि दयानन्द ने सत्य ज्ञान वा सच्चे ईश्वर की खोज के लिए ही अपने माता-पिता, कुटुम्बियों व घर बार व समस्त सांसारिक सुखों को छोड़ा था। उन्होंने देश भर में घूम कर ज्ञानियों की संगति व सान्निध्य को प्राप्त किया था और उनसे उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त किया था। वह योग की शरण में भी गये और उच्च योगियों से योग सीख कर योग में भी पूर्ण दक्षता प्राप्त की थी। मथुरा के गुरु विरजानन्द सरस्वती के पास जाकर उन्होंने सन् 1860 से सन् 1863 तक लगभग 3 वर्ष अध्ययन कर वैदिक व्याकरण, वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं का अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त किया था। सच्चे योगियों व ज्ञानियों की खोज में वह उत्तराखण्ड के वन व पर्वतों सहित दुर्गम प्रदेशों में भी एकाकी घूमे थे।

देश भर में आपको जहां से जो भी ग्रन्थ प्राप्त होता था, आप उसका वैज्ञानिक बुद्धि अर्थात् तर्क पूर्ण विवेचना करते हुए। अध्ययन करते थे। इस प्रकार 17 वर्ष के कठोर तप व पुरुषार्थ से वह वेद ज्ञान तक पहुंच पाये थे। उन्होंने वेदों को प्राप्त किया और उसका अनुशीलन व पर्यालोचन कर उनकी अन्त: साक्षी से जाना कि वेद वस्तुत: ही ईश्वरीय ज्ञान के आदि स्रोत हैं। वेदों की उत्पत्ति व वेद ज्ञान के महत्व का उन्होंने सत्यार्थप्रकाश सहित अपने अन्य ग्रन्थों व प्रवचनों आदि में उल्लेख कर उस पर युक्तिसंगत प्रकाश डाला है। इससे सिद्ध होता है कि वेद ही ईश्वर सत्य ज्ञान के ग्रन्थ हैं। इनकी तुलना में संसार का कोई ग्रन्थ नहीं है। मत-मतान्तर के ग्रन्थ तो अविद्या से भरे पड़े हैं। इन अविद्या से भरे ग्रन्थों का अध्ययन कर व उनका आचरण कर मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। लक्ष्य की प्राप्ति तो केवल वेद और वेदानुकूल ग्रन्थों के अध्ययन व आचरण से ही हो सकती है।

यह संसार ईश्वर के द्वारा निर्मित एवं संचालित है। विज्ञान के सभी नियमों का पालन इस संसार वा ब्रह्माण्ड में हो रहा है। विज्ञान की परिभाषा यह भी की जा सकती है कि ईश्वरीय नियमों का सूक्ष्म व विशद ज्ञान ही विज्ञान है। यही तो हमारे सभी वैज्ञानिक करते हैं। सृष्टि रचना को देखकर ईश्वर के ज्ञान की गम्भीरता व गहनता तथा व्यापकता के दर्शन होते हैं। ईश्वर ज्ञानस्वरूप है। इसी कारण उसका ज्ञान वेद भी विद्या व ज्ञान की कसौटी पर शत प्रतिशत सत्य पाया जाता है। मत-मतान्तरों के किसी ग्रन्थ में यह बात नहीं है। महाभारत काल के बाद वेदों का ज्ञान तत्कालीन लोगों के आलस्य व प्रमाद से विलुप्त प्राय: हो गया था। ऋषि दयानन्द के पुरुषार्थ से यह पुन: सुलभ हुआ है। संसार में ज्ञान के समान कोई वस्तु पवित्र व उससे अधिक मूल्यवान नहीं है। ज्ञान से मनुष्यों को दु:खों से मुक्ति मिलती है। मृत्यु होने पर जन्म मरण से अवकाश होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह लाभ वेदाध्ययन वा वेदों के स्वाध्याय सहित उनके आचरण, दोनों एक साथ होने, पर प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द को इसका आदर्श उदाहरण कह सकते हैं।

वेदों के ज्ञान को ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल 1825-1883 में उस युग व समय की आवश्यकता के अनुरूप सन् 1875 में सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ रचकर प्रदान किया। वेदों की ही भांति सत्यार्थ प्रकाश भी वैदिक सत्य सिद्धान्तों व मान्यताओं को आर्यभाषा हिन्दी में प्रस्तुत करने वाला धर्म ग्रन्थ है जो मनुष्य को अविद्या से मुक्त कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराता है। सत्यार्थ प्रकाश को चौदह समुल्लासों में रचा गया है। इसका एक एक शब्द अविद्या का नाश करता है और सत्य ज्ञान का अमृत अपने पाठकों को पिलाता है जिससे वह अमृत अर्थात् जन्म मरण से छूटकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है। मोक्ष ही सच्चा व श्रेष्ठतम अमृत है। इसकी तुलना में संसार के सभी पेय तुच्छ हैं। सत्यार्थ प्रकाश में निहित दो शब्दों के अर्थ पर विचार करें तो सत्य पदार्थों के अर्थ का प्रकाश करना ही सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का उद्देश्य है। संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति ही तीन अनादि, नित्य, अविनाशी, अमर पदार्थ हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय......

रक्षाबन्धन के पर्व का महत्त्व

पर्व किसी भी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग होते हैं। पर्वों के द्वारा किसी भी संस्कृति और सभ्यता के महत्त्व का ज्ञान होता है। हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाए जाने वाले सभी पर्व किसी न किसी दिव्य संदेश के परिचायक होते हैं। पर्वति पूरयति आदि शास्त्र की परिभाषा के अनुसार हमारे पर्व हमें प्रेरणा देते हैं, पूर्ण करते हैं और हमारे मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। पर्वों की ऐतिहासिकता एवं पवित्रता के कारण उसकी संस्कृति और सभ्यता के महत्व का ज्ञान होता है। पर्व जितने प्रेरणादायक होंगे, उतना ही संस्कृति का गौरव होगा। पर्व किसी भी संस्कृति की नींव के रूप में होते हैं। नींव जितनी सुदृढ़ होगी, भवन उतना ही भव्य बनेगा। इसीलिए जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में रीढ़ की हड्डी का महत्त्व है उसी प्रकार संस्कृति रूपी शरीर के लिए पर्व भी मेरू दण्ड का कार्य करते हैं।

रक्षाबन्धन का पर्व भी आज हमारी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग बन गया है। यह पर्व कब शुरू हुआ, किस रूप में शुरू हुआ? और क्यों शुरू हुआ? इस बारे में कोई ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात नहीं हैं, फिर भी आपसी स्नेह और आत्मीयता के कारण आज यह प्रमुख पर्व बन गया है जो भाई बहन के पावन स्नेह का प्रतीक हैं। विश्व के किसी भी देश में ऐसा स्नेह और भावनात्मक त्यौहार नहीं मनाया जाता है। विदेशी आक्रान्ताओं के भय से भारतीय नारियां अपने सतीत्व की रक्षा के लिए भाईयों तथा बलवान पुरूषों के हाथ में राखी बाँधकर अपनी रक्षा की कामना करती थी। इससे भाई बहन का सम्बन्ध दृढ़ होता था। भाई को रक्षा सूत्र बान्ध कर बहन संकट और विपत्ति में रक्षा पाने की अधिकारिणी समझती थी और हर वर्ष भाई को अपने उत्तरदायित्वों की आदर्श परम्परा को संस्कार देने वाला यह रक्षाबन्धन का त्यौहार आता है।

हमारी संस्कृति में सदा से पर्वों को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। प्राचीन काल से जिस समय यह रक्षाबन्धन का पर्व शुरू भी नहीं हुआ था, तब से यह श्रावणी का पर्व मनाया जाता रहा है और आज भी श्रावणी का पर्व मनाया जाता है। इस पर्व पर नए यज्ञोपवीत धारण करने और पुराने को छोड़ने की प्रथा जुड़ी हुई है। गृह्यसूत्रों में विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। गृह्यसूत्रों के आधार पर यह भी एक परिपाटी है कि प्रत्येक उत्तम यज्ञ-याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जाए। उसी आधार की पोषिका श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा है। यज्ञोपवीत का आर्यों के संस्कार और कर्मकाण्ड में बड़ा ही महत्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही वह पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण आदि कर्त्तव्यों से अपने को बन्धा हुआ समझने लगता है। इसी पर्व के अपभ्रंश के रूप में राजपूत काल में अबलाओं के अपनी रक्षार्थ सबल वीरों के हाथ में राखी बान्धने की परिपाटी का प्रचार हुआ है। जिस किसी वीर क्षत्रिय को कोई अबला राखी भेजकर अपना राखीबान्ध भाई बना लेती थी, उसकी आयुभर रक्षा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता था। चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षार्थ राखी भेजी थी, जिससे उसने चित्तौड़ पहुंचकर तत्काल अन्त समय पर उसकी सहायता की थी और चित्तौड़ का बहादुरशाह के आक्रमण से उद्धार किया था। तब से बहुत से प्रान्तों में यह प्रथा प्रचलित है कि बहनें अपने भाईयों को श्रावणी के दिन राखी बान्धती हैं और उनसे कुछ द्रव्य उपहारस्वरूप प्राप्त करती हैं।

रक्षाबन्धन का पर्व वर्तमान समय में प्रासंगिक हो गया है और एक फैशन के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हो गया है। प्राचीन समय में जिस रक्षा भाव के साथ राखी बान्धी जाती थी, समय परिवर्तन के साथ वो भाव समाप्त होता गया है। इसीलिए वर्तमान समय में यदि बहनें भाईयों को रक्षा सूत्र बान्ध कर संकट के समय में अपनी रक्षा के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ बनाना चाहती हैं तो उनके भी कुछ कर्त्तव्य हैं। उन्हें अपनी मेधा से, सौम्यता से, गरिमा से अपने भाईयों को मोहित करना होगा। बहनों का व्यक्तित्व शालीन और सुसंस्कृत होना अत्यन्त आवश्यक है। नारी के सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक अधिकारों के लिए आर्य समाज हमेशा से प्रयत्नशील रहा हैं और आगे भी नारी के उत्थान के लिए कार्य करता रहेगा, परन्तु साथ ही नारी का कर्त्तव्य है कि वे अपने मधुर एवं शालीन व्यक्तित्व से देश के वातावरण को सुगन्धित बनाएं। आज समाज में जो विकृत्तियां पैदा हो रही हैं, जो कुण्ठाएं उत्पन्न हो रही हैं उन्हें दूर करने में नारियों का योगदान परम आवश्यक है। आज बहनों को आधुनिकता की इस दौड़ में अपने आपको एक आदर्श के रूप में स्थापित करना है। फैशन शो आदि अनावश्यक परेड़ में शामिल होना जीवन की उपयोगिता नहीं है, कोई सार्थकता नहीं है, कोई यथार्थता नहीं है। नारी का स्थान हमेशा ही भारतीय संस्कृति में गौरवमय है। महर्षि मनु जी लिखते हैं कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। महर्षि मनु द्वारा वर्णित नारी का वह सम्मान व पूजा फैशन शो आदि के द्वारा नहीं होगी। उस महत्त्व को प्राप्त करने के लिए बहनों को लक्ष्मीबाई, दुर्गा आदि को अपना आदर्श मानना पड़ेगा। समाज को विकृत्तियों से बचाने के लिए अनावश्यक नारी के सौंदर्य को प्रदर्शित करने वाले फैशन शो और विज्ञापनों को बन्द करना चाहिए। नारी का जीवन तो बहुत ही प्रेरणादायी होता है। उनके त्याग, तपस्या से ही इस धरती को शूरवीर योद्धा, महान् धार्मिक विभूतियां और देशभक्त मिले हैं और स्वयं भी आज प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी हैं। नारी का जीवन बहुत ही आदर्श और प्रेरणादायक होना चाहिए। शास्त्रकार कहते हैं कि-माता निर्माता भवति अर्थात् माँ को परमात्मा ने निर्माण करने की शक्ति प्रदान की है, और वह निर्माण तभी कर सकती है जिसका स्वयं का जीवन त्याग, तपस्या से परिपूर्ण होगा।

रक्षाबन्धन का पर्व जहां पर भाई- बहनों के प्यार और स्नेह का पर्व है वहीं पर हमें यह भी याद दिलाता है कि आज हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है। भाई- बहनों के सम्बन्ध में जो मिठास और अपनापन होना चाहिए वो भी समाप्त होता जा रहा है। रक्षाबन्धन का पर्व आज के समय में आपसी प्रेम प्यार से ज्यादा फैशन बन गया है। आधुनिकता की इस दौड़ में रिश्तों में अपनापन समाप्त हो गया है। इसीलिए रक्षाबन्धन के पर्व पर भाईयों और बहनों को मिलकर विचार करना चाहिए कि समाज के वातावरण को सुन्दर बनाने के लिए अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं कि नहीं। जहां एक भाई के ऊपर अपने माता-पिता का दायित्व होता है, वहीं पर एक बहन के ऊपर अपने सास-ससुर और परिवार का दायित्व होता है। अगर एक भाई और बहन अपने दायित्व का सही ढंग से पालन करे तो समाज में टूट रहे रिश्तों को एक नई रोशनी मिलेगी और दिन- प्रतिदिन जो वृद्धाश्रम बढ़ते जा रहे हैं वो भी बन्द हो जाएंगे। अगर इस भाव से रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाएगा तो समाज में रिश्तों को एक नई परिभाषा मिलेगी और रिश्तों में जो अपनापन, स्नेह, मिठास और आत्मीयता समाप्त हो गई है, वो भी पुनः लौट आएगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वामी जी का मूत्तिपूजा पर कड़ा प्रहार सत्यार्थ प्रकाश में

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

मैंने यह लेख महर्षि कृत उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास को पढ़कर लिखा है। इसमें स्वामी जी ने प्रश्नोत्तर द्वारा मूर्त्तिपूजा पर तर्क के आधार पर कड़ा प्रहार किया है, जिसको पढ़कर विज्ञ पाठकगण अवश्य ही समझ लेंगे कि ईश्वर की उपासना केवल निराकार मानकर ही की जा सकती है और उसी उपासना से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। ईश्वर को साकार मान कर मूर्त्तिपूजा द्वारा ईश्वर की उपासना करना वेद विरूद्ध तो है ही साथ ही सही उपासना हो ही नहीं सकती। मैं समझता हूँ कि इस लेख को पढ़कर पाठकगण अवश्य ही लाभ उठावेंगे और मूर्त्तिपूजा छुड़ाने में इससे काफी सहयोग मिलेगा। यदि थोड़ा भी सहयोग मिले तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा। लेख इसी भांति है-

प्रश्न-मूर्त्तिपूजा में पुण्य नहीं तो पाप भी तो नहीं ?

उत्तर-कर्म दो किस्म के होते हैं। विहित: जो कर्त्तव्यता से वेद में सत्यभाषणादि प्रतिपादित हैं। दूसरा निषिद्ध-जो अकर्त्तव्यता से मिथ्या भाषणादि वेद में निषिद्ध है। जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म, उसका न करना अधर्म हैं, वैसे ही निषिद्ध कर्म करना अधर्म और न करना धर्म है। जब वेद के विरूद्ध मूर्त्तिपूजादि कर्म आप करते हो तो पापी क्यों नहीं।

प्रश्न-साकार में मन स्थिर होता है और निराकार में स्थिर होना कठिन है इसलिए मूर्त्तिपूजा करनी चाहिए ?

उत्तर-साकार में मन स्थिर कभी भी नहीं हो सकता क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमने और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार अनन्त परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता, किन्तु उसी के गुण कर्म स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत् में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता है, इसलिए मूर्त्तिपूजा करना अधर्म है।

प्रश्न-जो अपने आर्यावर्त्त में ''पञ्चदेव पूजा'' शब्द प्राचीन काल से चला आता है, उसका ''पञ्चदेव पूजा'' जो शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्त्ति बनाकर पूजते हैं, तो क्या वहीं पञ्चायतन पूजा है वा नहीं ?

उत्तर-किसी प्रकार की मूर्त्तिपूजा न करना किन्तु मूर्त्तिमान'' की पूजा अर्थात् सत्य करना चाहिए। वह पञ्चदेव पूजा या 'पञ्चयतन पूजा' शब्द बहुत अच्छे अर्थ वाला था, परन्तु मूढ़ों ने उस संदर्भ को छोड़कर, असत्य अर्थ पकड़ लिया जो आजकल शिवादि पाँचों की मूर्त्तियां बनाकर पूजते हैं, उनका खण्डन तो कर चुके हैं। सच्ची पञ्चयतन पूजा कुछ मन्त्रों के आधार पर इस प्रकार है :

प्रथम मूर्त्तिमती पूजनीय देवता के रूप में ''माता'', जिसको तन, मन, धन से तथा सेवा से सन्तान को चाहिए कि उसे प्रसन्न रखे। उसका मन किसी प्रकार से भी दु:खी न करें। दूसरा सत्कर्त्तव्य देव के रूप में ''पिता'', उसकी भी माता के समान सेवा करे। तीसरा देव जो विद्या को देने वाला है वह हैं आचार्य ''उसकी भी तन, मन, धन से सेवा करनी चाहिए। चौथा देव हैं ''अतिथि'' जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्यउपदेश से सुखी करता है उसकी सेवा करनी चाहिए। पाँचवां स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय हैं। ये पाँच मूर्त्तिमान देव है जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियाँ हैं। इनकी सेवा न करने जो पाषाणादि मूर्त्ति पूजते हैं, वे अतीव पामर, नरक गामी हैं।

प्रश्न-माता-पिता की सेवा करें और मूर्त्तिपूजा भी करें, तब तो कोई दोष नहीं ?

उत्तर-पाषाणादि मूर्त्तिपूजा तो सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्त्तिमानों की सेवा करने में ही कल्याण है। बड़े अनर्थ की बात है कि साक्षात् माता आदि, प्रत्यक्ष सुखदायक देवों को छोड़ के अदेव पाषाणादि में सिर मारना, स्वीकार करते हैं। इसको मूढ़ों ने इसलिए स्वीकार किया है कि जो माता-पिता आदि के सामने नैवेद्य या भेंट-पूजा धरेंगे तो वे स्वयं खा लेंगे और भेंट-पूजा भी ले लेंगे। हमारे मुख या हाथ में कुछ न पड़ेगा। इसीलिए वे पाषाणादि की मूर्त्ति बना, उसके आगे नैवेद्य व भेंट-पूजा चढ़ाते हैं ताकि उनको मिलता रहे।

प्रश्न-जैसे स्त्री आदि की पाषाणादि मूर्त्ति देखने से कामोत्पत्ति होती है, वैसे ही वीतराग शान्त की मूर्त्ति देखने से वैराग्य और शान्ति की प्राप्ति क्यों न होगी ?

उत्तर-नहीं हो सकती। क्योंकि उस मूर्त्ति के जड़त्व धर्म, आत्मा में आने से विचार शक्ति घट जाती है। विवेक के बिना वैराग्य, वैराग्य के बिना विज्ञान, विज्ञान के बिना शान्ति नहीं होती और जो कुछ होता है सो उनके संग उपदेश और उनके इतिहासादि के देखने से होता है। क्योंकि जिसका गुण या दोष न जानके उसकी मूर्त्ति मात्र देखने से प्रीति ही नहीं होती। प्रीति होने का कारण गुणज्ञान है।

प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र जी ने मूर्त्ति स्थापन किया है। यदि मूर्त्तिपूजा वेद विरूद्ध होती तो रामचन्द्र जी मूर्त्ति स्थापन क्यों करते और बाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते ?

उत्तर-रामचन्द्र जी के समय में शिवलिंग या मन्दिर का नामो निशान भी नहीं था। बाद में यह ठीक है कि किसी दक्षिण ''देशस्थ राम'' राजा ने मन्दिर बनवा, लिंग का नाम 'रामेश्वर' धर दिया हो। जब रामचन्द्र जी सीता को ले हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग से विमान पर बैठ अयोध्या को आ रहे थे, तब सीता जी से कहा कि-हे सीते ! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चतुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना, ध्यान भी करते थे। वहीं जो सर्वत्र विभु-व्यापक महान देवों का देव ''महादेव'' परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहाँ प्राप्त हुई और देख ! यह सेतु हमने बाँधकर लंका में आ करके, उस रावण को मार तुझ को ले आये। इसके सिवाय वहाँ बाल्मीकि जी ने अन्य कुछ भी नहीं। लिखा:

(नोट श्री राम चन्द्र जी ने देवों के देव ''महादेव'' यानि परमात्मा की उपासना को लिखा है, यदि श्री राम स्वयं ईश्वर के अवतार होते तो ऐसा कभी नहीं लिखते)

प्रश्न-यह मूर्त्तिपूजा और तीर्थ सनातन से चले आते हैं, झूठे क्यों कर हो सकते हैं ?

उत्तर-तुम सनातन किसको कहते हो ? जो सदा से चला आता है। यदि यह सदा से होता तो वेद और ब्राह्मणादि ऋषि-मुनि कृत पुस्तकों में इनका नाम क्यों नहीं ? यह मूर्त्तिपूजा अढ़ाई-तीन सहस्र वर्ष के इधर-उधर वाम मार्गी और जैनियों से चली है। प्रथम आर्यावर्त्त में नहीं थी और यह तीर्थ भी नहीं थे। जब जैनियों ने गिरनार, पालिटाना, शिखर, शत्रुञ्जय और आबू आदि तीर्थ बनाये। उनके अनुकूल हम लोगों ने भी बना लिए। जो कोई इनके आरम्भ की परीक्षा करना चाहे, तो वे पण्डों की पुरानी बही, तांबे के पात्र आदि देखें तो निश्चय हो जायेगा कि ये सब तीर्थ पाँच सौ अथवा एक हजार वर्ष में इधर ही बने हैं। सहस्त्र वर्ष के ऊपर का लेख किसी के पास नहीं निकलता। इसी से सिद्ध होता है, ये सब आधुनिक हैं।

प्रश्न-देखो ! कलकत्ते की काली और कामाक्षा।'' आदि देवी को लाखों मनुष्य मानते हैं। क्या यह चमत्कार नहीं हैं ?

उत्तर-कुछ भी नहीं। ये अन्धे लोग भेड़ के तुल्य एक के पीछे दूसरे चलते हैं। कूप-खाई में गिरते हैं, हट नहीं सकते। वैसे ही एक मूर्ख के पीछे दूसरे चल कर मूर्त्तिपूजा रूपी गढ़े में फंस कर दु:ख पाते हैं।

क्या ऋग्वेद बहुदेवतावाद का समर्थक है ?

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

बहुदेवतावाद पर विचार करते समय हमें सर्व प्रथम यह जानना चाहिए कि देवता किसे कहते हैं। आचार्य व्यास ने 'देव' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है- देवोदानद्वा, द्योतनद्वा, द्युस्थानों भवतीति वा। यो देवः सा देवता। अर्थात् दान देने से, प्रकाशित करने से, प्रकाशित होने से और द्युस्थानी होने से किसी व्यक्ति या पदार्थ और परमात्मा को देव कहा जाता है। देव को ही देवता कहते हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वेद में देवता शब्द के दो अर्थ हैं, एक दिव्यता भाव अथवा गुण और दूसरा प्रतिपाद्य विषय। पूर्ण दिव्य भाव और गुण तो केवल ईश्वर में हैं शेष पदार्थों और व्यक्तियों में जितने-जितने दिव्य गुण हैं उतना-उतना उनमें देवपन है। विद्वानों को भी देव कहा जाता है। वेदों में देवताओं की संख्या पर भी विचार किया गया है। ऋग्वेद 1.1.39 के अनुसार परमात्मा के अतिरिक्त 33 देवता हैं। शतपथ ब्राह्मण में भी 33 देवताओं की ही चर्चा है। इनकी गिनती इस प्रकार है। वसु 8, रूद्र 11, आदित्य 12, इन्द्र और प्रजापति, यजुर्वेद में देवताओं की संख्या 3339 बताई गई है परन्तु उनका विवरण नहीं दिया गया है। वेद में देवताओं का प्रयोग मंत्र के प्रतिपाद्य विषय के लिए किया गया है। बहुत से देव पद अनेक अर्थों वाले भी होते हैं। जैसे अग्नि शब्द भौतिक अग्नि और परमात्मा दोनों के लिए व्यवहार में आया है। वेद में कई स्थानों पर अग्नि शब्द राजा और सेनापति के लिए भी आया है। वेद में प्रत्येक मंत्र के पूर्व में ऋषि, देवता, छन्द और स्वर लिखे होते है। यहां देवता का अर्थ, जो मंत्र से अथवा मंत्र दृष्टा ऋषि से वर्णित अथवा कथित किया जाता है वह देवता होता है सर्वानुक्रमणी 2.4 सामान्य रूप से वैदिक वाङ्मय में देवता तीन प्रकार के होते हैं पहले चेतन देवता जैसे माता-पिता आचार्य, विद्वान आदि। दूसरे जड़ देवता जैसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु आदि और तीसरा देवाधिदेव परब्रह्म परमेश्वर।

वेदों में परब्रह्म परमेश्वर को अनेक गुणों से युक्त माना गया है जैसे सृष्टि कर्ता, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, सर्वव्यापक, अनन्त सच्चिदानन्द आदि। फिर अलग-अलग गुण के आधार पर अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया है। जैसे सृष्टि कर्ता रोहित, सर्वव्यापक विष्णु, सर्वशक्तिमान इन्द्र, न्यायकारी यम, देवाधिदेव महादेव, कल्याणकारी शिव आदि। इसलिए ऋग्वेद में ईश्वर को कई गुण वाचक नामों से पुकारा गया है। अब हम ऋग्वेद में से ऐसे कुछ मंत्र रख रहे हैं।

इन्द्राग्नी मित्रावरूणादितिं स्वः पृथिवी द्यां मरूतः पर्वता अपः।
हुवे विष्णु पूषणं बृह्मणस्पतिं भगंनु शंसं सवितारभूतये।। ऋ. 5.46.3.

मैं (उतये) अपने रक्षण के लिए (इन्द्राग्नी) बल और प्रकाश के देव को (हुवे) पुकारता हूँ। मैं (मित्रावरूणा) मित्र और वरूण को पुकारता हूँ। (अदितिम्) मैं स्वास्थ्य की देवी को पुकारता हूँ और (स्वः) प्रकाश का आराधक होता हूँ। (पृथ्वीं, द्याम्) मैं शरीर रूपी पृथ्वी और मस्तिष्क रूपी द्यो लोक को पुकारता हूँ। (मरूतः) प्राणों को (पर्वतान्) अंग-प्रत्यंग में शक्ति के पूरण को तथा (अपः) रेत कणों को पुकारता हूँ। (विष्णुम्) सर्व व्यापक विष्णु को पुकारता हूँ। (ब्रह्मणस्पतिम्) ज्ञान के स्वामी को पुकारता हूँ। (नु) और निश्चय से (शंसम्) स्तुत्य प्रभु को पुकारता हूँ। फिर (सवितारम्) उस प्रेरक प्रभु को पुकारता हूँ।

भावार्थ-मंत्र में सभी नाम परमेश्वर के ही है।

रूपं रूपं प्रति रूपो बभूव तदस्य रूपं प्रति चक्षणाय।
इन्द्रो मायाभिः पुरूरूपं ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शतादशं।। ऋ. 6.47.18.

(इन्द्रः) हे परमैश्वर्यशाली प्रभो। (रूपम् रूपम्) प्रत्येक रूपवान पदार्थ के प्रति (प्रतिरूपः) प्रतिरूप (बभूव) होता है। (अस्य) इस प्रभु का (तद् रूपम्) वह रूप (प्रतिचक्षनाय) प्रत्येक व्यक्ति के लिए देखने योग्य होता है। (इन्द्रः) वे परमैश्वर्यशाली प्रभू (मायाभिः) अपनी माया से (पुरूरूपः) अनेक रूप वाले होते हुए (ईयते) गति करते हैं। (अस्य) उस प्रभु के (हि) ही (दश हरयः) ये दस संख्या वाले इन्द्रियायाश्व (शता) शत वर्ष पर्यन्त (युक्ता) हमारे शरीर से जुड़े रहते हैं।

भावार्थ-परमात्मा सभी रूपों में स्वयं को प्रतिरूप में बता रहा है।

पर्जन्यवाता वृषभा पुरीषिणेन्द्र वायू वरूणोमित्रो अर्यमा।
देवां आदित्यां अदितिं हवामहे पार्थिवासो दिव्यासो अप्सुये।। ऋ. 10.69.9.

हम (देवान्) देवों को (हवामहे) पुकारते हैं जो देव (आदित्यान्) उत्तमता का आदान करने वाले हैं (ये) जो (पार्थिवासः) पृथ्वी के साथ सम्बद्ध हैं (दिव्यासः) द्यु लोक के साथ सम्बद्ध है और (ये) जो (अप्सुः) अन्तरिक्ष में हैं। साथ ही (अदितिम्) अखण्डन अर्थात् स्वास्थ्य की हम प्रार्थना करते हैं। स्वास्थ्य आधार बनता है और देव उसमें आधेय होते हैं। (पर्जन्यवाता) बादल और बात को पुकारते हैं (वृषभा) ये सुखों का वर्णन करने वाले हैं। (इन्द्रवायू) इन्द्र और वायु को पुकारते हैं जो (पुरिषिण) पालन और पूरण करने वाले हैं। (वरूणाः) द्वेष निवारक देवता (मित्र) स्नेह के देवता तथा (अर्यमा) काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नियमन करने वाले इन तीनों को पुकारते हैं।

इन्द्रो वसुभिः परिपातु नो गयमादित्यैनो अदितिः शर्मा यच्छतु।
रूद्रोरूद्रेभिर्देवो मृडयाति-नस्त्वष्टा नो ग्नाभिः सुविता-यजिन्वतु।। ऋ. 10.66.3

(इन्द्रः) सर्वशक्तिमान प्रभु (वसुभिः) निवास के लिए आवश्यक तत्वों के द्वारा (नः) हमारे (गायम्) शरीर गृह को (परिपातु) रक्षित करे। (अदितिः) अदीना देवता (आदित्यै) सब देवों के साथ (नः) हमारे लिए (शर्म) सुख को (यच्छतु) दे। (रूद्रः) गर्जना करता हुआ प्रभु 'रूद्र' (देव) देव (रूद्रेभिः) प्राणों के द्वारा (नः मृडयाति) हमें सुखी करतेहैं। (त्वष्टा) ज्ञान से दीप्त प्रभु (ग्याभिः) वेद वाणी द्वारा (नः) हमें (सुविताय) उत्तम मार्ग पर गति के लिए (जिन्वतु) प्रेरित करें।

अदिति द्यावा पृथिवी ऋतं महन्द्रिविष्णु मरूतः स्वर्बृहत।
देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसुन्तुदान्त्स वितारं सुदंस सम्।। ऋ. 10.66.4

(अदितिः) स्वास्थ्य की देवी (द्यावापृथिवी) ज्ञान से देदीप्यमान मस्तिष्क रूप द्युलोक तथा दृढ़ शरीर रूप पृथ्वी लोक (ऋतम्, महत्) महनीय ऋत, प्रत्येक कार्य का समय पर पूर्ण होना (इन्द्रा विष्णु) शक्तिशाली कर्म के प्रतीक इन्द्र तथा व्यापक कर्मों के प्रतीक विष्णु हैं। (मरूतः) प्राण तथा (बृहत् स्वः) वृद्धि के कारणभूत प्रकाश है। ये सब देव मेरे लिए सुख को प्राप्त कराने वाले है। हम (अवसे) रक्षण के लिए (वसून्) प्रकृति ज्ञान में निपुण वसु नामक विद्वानों को (रूद्रान्) जीव की प्राण विद्या को समझने वाले रूद्रों को (आदित्यान् देवान्) ब्रह्म जीव और प्रकृति के ज्ञान में निपुण आदित्यों को (हवामहे) पुकारते हैं। (हम, सुदंससम्) उत्तम कर्मों वाले (सवितारम्) सकल जीव प्रेरक प्रभु को पुकारते हैं। इसी विषय में ऋग्वेद से एक ऋचा और देते हैं।

सरस्वान्धीभिरूणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमावायुरश्विना।
ब्रह्मकृतो अमृताविश्व वेदसः शर्मनो यंसन्त्रिवरूथम हसः।। ऋ. 10.66.5

(धीभिः) उत्तम बुद्धियों के साथ (सरस्वान्) ज्ञान का अधिष्ठाता परमात्मा (धृतवतः) सब उत्तम कर्मों को धारण करने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

देवता पुरुषार्थी के सहायक

-ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

विश्व का प्रत्येक प्राणी आनंदमय रहना चाहता है, सुखी रहना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति विश्व में ख्याति चाहता है। यह सब पाने के लिए अत्यधिक मेहनत की आवश्यकता होती है, पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है, जिससे बच जाने का वह प्रयास करता है। मिलता उसे ही है जो मेहनत करता है। बिना प्रयास किये कुछ भी नहीं मिल सकता है। इस तथ्य को अथर्ववेद में इस प्रकार बताया गया है :

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय न स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।। अथर्ववेद २०.१८.३।।

देवता यज्ञकर्ता या कर्मठ को चाहते हैं, आलसी को नहीं चाहते हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति ही श्रेष्ठ आनंद को प्राप्त करते हैं।

पुरुषार्थ मानव जीवन का एक आवश्यक अंग है। जो पुरुषार्थी है, उसकी सहायता परमात्मा करता है। देवता भी पुरुषार्थी को ही चाहते हैं। संसार भी पुरुषार्थी को ही चाहता है। जिस पुरुषार्थी को सब चाहते हैं, वह पुरुषार्थ वास्तव में है क्या ? जब तक हम पुरुषार्थ शब्द को नहीं जान लेते तब तक इस सम्बन्ध में और कुछ नहीं कर सकते। अत: आओ पहले हम जानें की वास्तव में पुरुषार्थ से क्या अभिप्राय है :

पुरुषार्थ से अभिप्राय-पुरुषार्थ से अभिप्राय है मेहनत। जो व्यक्ति चिंतन करता है, मनन करता है, एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यत्न करता है, प्रयास करता है, वह व्यक्ति पुरुषार्थी होता है। इससे स्पष्ट होता है कि मेहनत करने वाला पुरुषार्थी है। जो किसी विषय पर मनन, चिंतन कर उसे भली प्रकार समझ कर उसे पाने का यत्न करता है वह पुरुषार्थी है। अत: हम कह सकते हैं कि पुरुषार्थ से भाव मेहनत करने से है, यत्न करने से है, एक निर्धारित उद्देश्य को पाने के लिए जो भी यत्न किया जाता है, उसे पुरुषार्थ कहते हैं।

पुरुषार्थ के इस इतने उच्चकोटि के भाव से पुरुषार्थ का महत्व भी स्पष्ट हो जाता है। मेहनती व्यक्ति को पुरुषार्थी कहा गया है। जो अपने लक्ष्य को पाने के लिए यत्न करता है, उसे पुरुषार्थी कहा गया है। उसका उद्देश्य चाहे धन प्राप्ति का हो, अच्छे शरीर के गठन का, शिक्षा प्राप्ति का हो चाहे प्रभु प्राप्ति का। किसी भी क्षेत्र में वह उपलब्धियां पाना चाहता हो तथा इन उपलब्धियों को पाने के लिए जब वह सच्चे मन से यत्न करता है तो उसे पुरुषार्थी कहते हैं, मेहनती कहते हैं, लग्न शील कहते हैं।

इस प्रकार का मेहनती व्यक्ति जब अपनी मेहनत के फलस्वरूप कुछ उपलब्धियाँ पा लेता है तो उसका अपना मन तो प्रफुल्लित होता ही है साथ में उसके परिजनों को भी अपार ख़ुशी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति को देवता ही नहीं प्रभु भी पसंद करते हैं। जिस व्यक्ति को परमात्मा का आशीर्वाद मिल जाता है, उस की ख्याति समग्र संसार में फ़ैल जाती है। सब ओर उसकी चर्चा होने लगती है, जिससे उसका ही नहीं उसके परिवार की यश व कीर्ति भी दूर-दूर तक चली जाती है। इस प्रकार वह अपने परिवार का नाम ऊँचा करने का कारण बनता है।

जो पुरुषार्थ नहीं करता, उसे निष्क्रिय कहते हैं, उसे कर्महीन कहते हैं, उसे आलसी कहते हैं, उसे अकर्मण्य कहते हैं। जो कुछ काम ही नहीं करता, उसे उपलब्धियां कहाँ से मिलेंगी ?, उसे ख्याति कहाँ से मिलेंगी, उसे यश कहाँ से मिलेगा ? उसकी कीर्ति कैसे फ़ैल सकती है ? उसकी कहीं भी पहचान कैसे बन सकती है ? अर्थात् निष्क्रिय व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता। न तो इस संसार में तथा न ही देवताओं में और न ही ईश्वरीय शक्तियों में उसे कोई पसंद करता है। वह पशुओं की भान्ति इस संसार में आता है, खाता है तथा कीड़े मकौड़ों कि भान्ति इस संसार से चला जाता है। न तो जीवन काल में ही उसे कोई चाहने वाला होता है तथा न ही जीवन के पश्चात भी। अत: आलसी व कर्म हीन व्यक्ति को कहीं भी सन्मान नहीं मिलता। वह अपने लिए भी भार है और परिवार के लिए भी। जिसे परिजन ही पसंद नहीं करेंगे, उसे अन्य क्या चाहेंगे। इसलिए मन्त्र में कहा गया है कि देवता पुरुषार्थी को ही चाहते हैं। संस्कृत के एक सुभाषित में भी इस तथ्य का ही अनुमोदन करते हुए इस प्रकार कहा है:

"उद्यमः साहसं धैर्य बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवाः सहायकृत।।

अर्थात् उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पुरुषार्थ से गुण जहाँ रहते हैं, वहां परमात्मा भी सहायता करता है। पुरुषार्थी ही समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं। वे संसार का कल्याण करते हैं और संसार उनका गुणगान करता है। पुरुषार्थ, आलस्य का त्याग तथा निरंतर अपने कर्तव्य में तत्पर रहना समृद्धि का मूल है, सफलता का रहस्य है। पुरुषार्थ और स्वावलंबन का महत्त्व बताते हुए अंग्रेजी में कहा गया है-

"GOD HELP THOSE WHO HELP THEMSELVES"

परमात्मा उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। जो अपने सामने पड़ी थाली में परोसे भोजन को स्वयं अपने हाथ से उठा कर अपने ही मुंह में नहीं डालते तो उन्हें भोजन कराने कौन आवेगा ? उनकी तृप्ति कैसे हो सकती है ? अत: प्रभु का आशीर्वाद पाने के लिए हमें अपनी सहायता स्वयं करनी होगी। स्पष्ट है कि यहाँ भी पुरुषार्थ करने की ही प्रेरणा की गयी है।

मन्त्र के आरम्भ में ही इस सत्य को कहा गया है कि देवता पुरुषार्थी को ही चाहते हैं, मेहनत करने वालों को ही चाहते हैं, जिनका जीवन यज्ञमय होता है, उसे ही चाहते हैं अकर्मण्य अथवा आलसी को नहीं। अत: हे मानव! यदि तुम देवताओं को प्रसन्न रखते हुए प्रभु का आशीर्वाद लेना चाहता है, धनधान्य का स्वामी बन यश व कीर्ति को पाना चाहता है तो पुरुषार्थी बन।

बच्चों को सम्मानित किया गया

आर्य गर्ल्ज़ सी. सै. स्कूल, बठिण्डा में बच्चों से गायत्री मंत्र अर्थ समेत, आर्य समाज के नियम व सामान्य ज्ञान की लिखित प्रतियोगिता करवाई गई। जिसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। स्कूल के विद्यार्थियों ने वेस्ट मैटिरियल से बनाये सामान की प्रदर्शनी लगाई। मैडम अनिता जी, मधुबाला, नवनीत जी ने वेस्ट मैटिरियल की वस्तुएँ बनाने में अपना सहयोग दिया। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने बच्चों की हौंसला अफजाई की और उन्होंने बच्चों को बताया कि पढ़ाई के साथ-साथ वह सामान्य ज्ञान की तरफ भी विशेष ध्यान दें। वेस्ट मैटिरियल में भी प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को इनाम देकर सम्मानित किया गया। रिटायर्ड अध्यापिका श्रीमती अरूणा अरोड़ा जी की तरफ से मैट्रिक कक्षा में से संस्कृत विषय को सबसे अधिक अंक लेने वाले विद्यार्थी को 1000/- रूपये नकद राशि इनाम देकर सम्मानित किया। यह इनाम संस्कृत विषय को बढ़ावा देने के लिए पिछले कई वर्षों से श्रीमती अरूणा अरोड़ा जी की तरफ से दिया जा रहा है। रिटायर्ड प्रिंसीपल श्रीमती शान्ती जिन्दल जी की तरफ से भी समय-समय पर जरूरतमंद बच्चों को वर्दी, जूते व सहायता राशि प्रदान की जाती है। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने उनके इन शुभ कार्यों के लिए धन्यवाद किया और होनहार बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा शाबाशी दी। इस अवसर पर समूह स्टाफ तथा विद्यार्थी उपस्थित रहें। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी ने बच्चों के इन सहपाठ्य क्रियायों के लिए सराहना की।

-प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज़ सीनियर सकैण्डरी स्कूल, बठिण्डा

पृष्ठ 2 का शेष-सर्वोपरि महान...

इन तीनों शाश्वत व सनातन पदार्थों पर इस ग्रन्थ में व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। अन्य धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करने पर ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं होता जो सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर होता है। पदार्थों सहित 3 सृष्टि, मनुष्य के कर्तव्यों व अकर्तव्यों का बोध भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर होता है। ईश्वरो-पासना क्या, क्यों व कैसे का सन्देश भी इससे मिलता है। यज्ञ क्या, क्यों व कैसे करें ? का वर्णन भी सत्यार्थ प्रकाश में किया गया है। मूर्त्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, कृत्रिम भाग्यवाद, सामाजिक समानता को दूर करने के विचार भी इस ग्रन्थ में हैं। राजधर्म का यथार्थ स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ने को मिलता है। सत्यार्थ प्रकाश के चैदह समुल्लासों में ईश्वर के नामों की व्याख्या, बाल शिक्षा विषय, भूत प्रेत आदि का निषेध, जन्म पत्र व सूर्य आदि ग्रह समीक्षा, अध्ययन अध्यापन विषय, समार्वतन व विवाह विषय, वानप्रस्थ संन्यासाश्रम विधि, राजधर्म विषय, ईश्वर विषय, जीव की स्वतन्त्रता, वेद विषय, सृष्टि उत्पत्ति विषय, नास्तिक मत का निराकरण, मनुष्यों की आदि सृष्टि के स्थान का निर्णय, ईश्वर का जगत को बनाकर धारण करना, विद्या-अविद्या-बन्ध व मोक्ष विषय, आचार-अनाचार-भक्ष्य-अभक्ष्य आदि शताधिक विषयों का विस्तृत व व्यापक ज्ञान सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में कराया गया है। उतरार्ध के चार समुल्लासों में आर्यावर्त्त देश के मत-मतान्तरों का खण्डन व मण्डन, मूर्त्तिपूजा समीक्षा, तीर्थ शब्द का यथार्थ अर्थ, शिव व भागवत पुराण समीक्षा, शैव मत समीक्षा, नास्तिक मत समीक्षा, चारवाक मत समीक्षा, बौद्ध व जैन मत समीक्षा आदि सहित ईसाई व यवनमत समीक्षा पर भी सारगर्भित प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ न भूतो न भविष्यति श्रेणी का है। हम इसे वेद के बाद दूसरे स्थान पर रख सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य को इसे पढ़कर सत्य ज्ञान का बोध प्राप्त करना चाहिये।

लेख को विराम देने से पूर्व निवेदन है कि यदि ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित न किया होता तो देश और आर्य हिन्दू जाति का भविष्य सुरक्षित न रहता। सत्यार्थ प्रकाश के अभाव में विश्व में कभी सुख व शान्ति स्थापित नहीं हो सकती थी। यदि विश्व के सभी मत-मतान्तर सत्यार्थ प्रकाश व वेद वर्णित ईश्वर व धर्म के स्वरूप को मान लें तो मानवता की रक्षा होकर सर्वत्र सुख व शान्ति को स्थापित किया जा सकता है। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर व इसे आचरण में लाकर मनुष्य जन्म-मरण सहित परजन्म के सभी दु:खों से बचकर अभ्युदय व नि:श्रेयस को प्राप्त कर सकते हैं।

पृष्ठ 5 का शेष-क्या ऋग्वेद बहुदेवतावाद

वाला (वरूण:) निद्वेषता का अधिष्ठातृ देवता वरूण (पूषा) पोषण का देवता पूषा (विष्णु:) व्यापकता का अधिष्ठातृ देव विष्णु (महिमा) पूजा की भावना (वायु:) गति (अश्विना) प्राणापान ये सब (न:) हमारे लिए (शर्म) सुख को (यंसन) देवें। (बृह्मकृत) उपासना की वृत्ति वाले (अमृता:) विषयों के पीछे न भागने वाले (विश्व वेदस:) सम्पूर्ण धनों व ज्ञान वाले देव (न:) हमारे लिए (अंहस:) पाप से (विवरूथम्) इन्द्रियों मन और बुद्धि इन तीनों को रक्षित करने वाले (शर्म) शरण को (यंसन्) दें।

वेसे ये विभिन्न देवे दिखाई देते हैं परन्तु वास्तव में एक ही हैं।

इन्द्रं मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो दिव्यस्य सुपर्णो गरूत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।। ऋ. 1.164.46

जो एक अद्वितीय ब्रह्म में उसी के इन्द्रादि सब नाम है। इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि, दिव्य, गुरूत्मान, सुपर्ण जिन्हें अलग-अलग नाम से कहा गया है। विद्वानों का कथन है कि ईश्वर एक ही है उसी को अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि नामों से पुकारा जाता है। इससे सिद्ध होता है कि वेद में बहुदेववाद नहीं है। एक ही ईश्वर को अलग-अलग गुण वाचक नामों से पुकारा गया है।

श्रावणी पर्व पर स्वाध्याय और गायत्री जाप करें

ले.-श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर

श्रावणी के पर्व का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है। हमारे ऋषियों मुनियों ने इस पर्व को स्वाध्याय के लिए नियत किया है। स्वाध्याय हमारे जीवन का आवश्यक कर्त्तव्य है। शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य को कभी भी स्वाध्याय और प्रवचन से कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में बलपूर्वक कहते हैं कि यदि सुख की निद्रा लेना चाहते हो, इन्द्रियों और मन को संयमित करने की चाहना है, एकाग्रता प्राप्त करने की अभिलाषा है, प्रज्ञा की वृद्धि में रूचि है और अपना चिकित्सक स्वयं बनने की कामना है तो स्वाध्याय करो।

मनुष्य को स्वाध्याय के साथ-साथ गायत्री का जाप भी करना चाहिए। गायत्री मन्त्र के जाप से बुद्धि निर्मल होती है और मेधा, ऋतम्बरा, और प्रज्ञा जैसे स्वरूपों को प्राप्त करती है। बुद्धि जितनी पवित्र और निर्मल होगी उतना ही स्वाध्याय का आनन्द आएगा। वेदों को पढ़ने के लिए, उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय के लिए बुद्धि का पवित्र होना आवश्यक है। प्रतिदिन प्रात:काल की बेला में प्रभु की अमृतमयी गोद में बैठकर गायत्री महामन्त्र का जाप करना चाहिए। गायत्री मन्त्र को हृदयंङ्गम करने के पश्चात हमें स्वाध्याय में प्रवृत्त होना चाहिए। स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य की आत्मिक उन्नति होती है। संसार की कल्याण करने के लिए आत्मिक उन्नति आवश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठें नियम में इसी महत्व को प्रदर्शित किया है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, परन्तु साथ ही यह निर्देश दिया है कि जिस व्यक्ति की शारीरिक और आत्मिक उन्नति हुई है वही सामाजिक उन्नति कर सकता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार स्वाध्यायशील व्यक्ति को चार बातों की प्राप्ति होती है। पवित्र ब्राह्मणत्व, यथोचित्त आचार, कीर्ति और लोक सुधार की दृढ़ संकल्पशीलता।

श्रावणी के पर्व पर आत्म निरीक्षण की परम आवश्यकता है कि क्या हम स्वाध्यायशील हैं? स्वाध्याय की प्रवृत्ति का अभाव ही हमारी दीनता का प्रमुख कारण है। स्वाध्यायशील और गायत्री का जाप करने वाले व्यक्ति के मुख पर ओज और तेज होता है, मन विषयों से रहित होकर निर्मल और शान्त होता है। इन्द्रियां उसके वश में होती हैं और उसके मुख पर हमेशा प्रसन्नता का भाव बना रहता है। श्रावणी का पर्व हमें स्मरण दिलाता है कि हम ऋषियों की पद्धति का अनुकरण करते हुए ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। जिस वेद ज्ञान को महर्षि दयानन्द ने हमें दिया है, उस वेद ज्ञान को हम आगे देने का प्रयास करें और वेद की ज्योति को प्रज्वलित रखें। इसलिए आओ हम सभी व्रतशील होकर प्रतिदिन गायत्री जाप करने का संकल्प लें और स्वाध्याय की प्रवृत्ति बनाएं रखने का प्रयास करें।

कृष्ण जन्मोत्सव पर गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 18 अगस्त दिन शुक्रवार को श्री कृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सायं 3.00 बजे से 4.00 बजे तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जायेगा जिसके ब्रह्मा श्री आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री जी होंगे। मुख्य यजमान श्री राजेश मरवाहा और श्रीमती अनीता मरवाहा जी होंगे। इस अवसर पर 4.00 बजे से 5.30 बजे तक भजन संध्या एवं कृष्ण जन्मोत्सव पर कार्यक्रम होगा। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर पधार का धर्म लाभ उठावें। **-श्रीमती जनक रानी मंत्राणी**

तीज का त्यौहार मनाया

आर्य सी.सै.स्कूल वृन्दावन रोड लुधियाना पर तीज का त्यौहार मनाया गया जिसमें सभी बच्चों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। मेंहदी की प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आए बच्चों को स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी ने अपने पास से धनराशि देकर सम्मानित किया। श्रीमती विनोद गांधी ने बच्चों को तीज के त्यौहार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने लड़कियों को प्रेरणा दी कि आगे जाकर जब उनकी शादी के बारे में बात की जाए तो आप एक बात अपने ध्यान में जरूर रखें कि आपका जीवन साथी नशे का आदी न हो। इस मौके पर स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती रेखा कौल ने बच्चों को तीज के त्यौहार के बारे में बताया। इस अवसर पर स्कूल के सभी अध्यापक मौजूद थे।

-श्रीमती विनोद गांधी प्रबन्धक

नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह

आर्य समाज मंदिर पुतलीघर अमृतसर में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन एवं शुभारम्भ 30 जुलाई 2017 रविवार को सायं 4.00 बजे समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के अंतर्राष्ट्रीय प्रख्यात विद्वान वैदिक प्रवक्ता एवं भजन रचयिता पं.सत्यपाल जी पथिक द्वारा बड़ी श्रद्धा के साथ वेद मंत्रोच्चारण कर यज्ञ करवाया गया और साथ साथ भावार्थ भी समझाया गया। यज्ञ पर चारों दिशाओं में बैठे यजमानों से घृत एवं सामग्री की आहुतियां डलवाई। यज्ञोपरान्त वैदिक भजन गायन शृंखला में सर्वप्रथम श्री प्रो. प्रकाश जी प्रेम ने सत्संग महिमा का भजन गाकर भक्तिमय वातावरण बना दिया। श्री नरेन्द्र पंछी जी ने प्रभु भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात श्रीमती माधुरी एवं कुमारी महक ने मधुर कंठ से प्रभु भक्ति का भजन गाकर श्रोताओं का मनमोह लिया। भजन शृंखला के अन्त में श्री वीरेन्द्र कुलदीप साथी ने प्रभु भक्ति एवं ऋषि महिमा का सामूहिक भजन सुना कर उपस्थित आर्यजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नव निर्मित यज्ञशाला का निर्माण श्रद्धेया माता जगदीश आर्या अध्यक्षा आर्य महिला परिषद अमृतसर के अढ़ाई लाख के आर्थिक सहयोग एवं प्रेरणा से किया गया। अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुये माता जगदीश आर्या जी ने भिन्न भिन्न आर्य समाजों को प्रदत्त आर्थिक सहयोग का विश्लेषण किया। तदोपरान्त श्रद्धेय पं. सत्यपाल जी पथिक ने अपने ओजस्वी, प्रेरणादायक सम्बोधन से श्रोताओं को लाभान्वित किया। इस कार्यक्रम में आर्य समाज शक्ति नगर के महामंत्री श्री राकेश मेहरा अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज नवांकोट के प्रधान डा. प्रकाश जी अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज लक्ष्मणसर के प्रधान श्री इन्द्रपाल जी आर्य अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज माडल टाउन के प्रधान श्री देशबन्धु जी अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज लारेंस रोड के प्रधान श्री अरुण महाजन अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज जंडियाला गुरु के मंत्री श्री स्वतंत्र कुमार जी अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज हरिपुरा के प्रधान श्री दीनानाथ जी अपने सहयोगियों सहित, आर्य समाज मेहरपुरा एवं छोटा हरीपुरा के प्रधान एवं सदस्य आर्य युवक सभा के मंत्री श्री दिनेश आर्य, जितेन्द्र मल्होत्रा जी तथा बाजार श्रद्धानन्द आर्य समाज के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्य महिला परिषद की अध्यक्षा माता श्रीमती जगदीश आर्या जी ने अपने दल बल सहित सम्मलित होकर कार्यक्रम को चार चांद लगा दिये। आर्य समाज पुतलीघर के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने इस पावन कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु तन, मन, धन से सहयोग किया। अल्पाहार की पूर्ण व्यवस्था का व्यय श्री सुधीर ठुकराल सुपुत्र श्री इन्द्रजीत ठुकराल ने किया। यज्ञशाला की सजावट श्री देवेन्द्र कुमार, कुमार तानिष महाजन एवं पं.ओम प्रकाश शास्त्री ने की। लंगर का वितरण श्री महेन्द्र कान्त, श्री रघुवीर जी, श्री धर्मवीर जी, सीकरी जी एवं यशपाल जी गुप्ता द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष तौर पर दिल्ली से श्री अशोक मेहता जी के परममित्र श्री वेद भल्ला जी, जालन्धर से प्रधान श्री राज कुमार जी, श्री कमल किशोर जी एवं उनके सुपुत्र सम्मलित हुये। कार्यक्रम के अन्त में श्रद्धेय पं. सत्यपाल जी पथिक को आर्य समाज पुतलीघर के प्रधान श्री इन्द्रजीत ठुकराल एवं श्री सत्यदेव जी आर्य उप प्रधान ने शाल भेंट कर सम्मानित किया। श्रद्धेय माता जगदीश आर्या जी को श्रीमती रमेश रानी ठुकराल, श्रीमती तृप्ता महाजन, श्रीमती अनिता पथरिया, श्रीमती वन्दना गुप्ता एवं श्रीमती रन्जू ठुकराल ने डिजिटल क्लाक भेंट कर सम्मानित किया। शान्ति पाठ के उपरान्त अल्पाहार में माल पुडे, खीर, ब्रैड न्यूट्री एवं शीतल पेयजल के साथ चाय का वितरण किया गया। मंच संचालन पं. मुरारी लाल आर्य ने किया।

पं. मुरारी लाल आर्य

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर की नवनिर्मित यज्ञशाला में हवन करते हुये आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्य।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

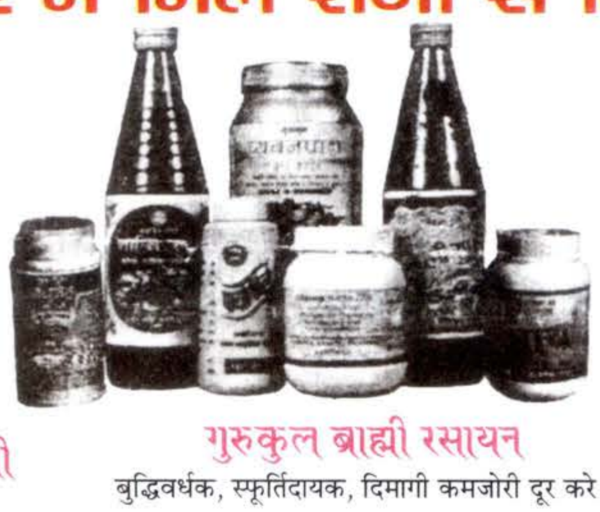

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।